M.A. Semester - 01
Philosophy CC - 03

अरस्तू के अनुसार Form और Matter की संक्षिप्त विवेचना

डॉ० रागिनी कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र केन्द्र
महाराजा कॉलेज, आरा

Form और Matter की अवधारणा अरस्तू के Metaphysics की दूसरी अवधारणा (सोपान) है। अरस्तू के दर्शन में द्रव्य (Matter) और आकार (Form) दो मूलभूत Categories हैं। द्रव्य और आकार का भेद अरस्तू के कारणता सिद्धान्त पर आधारित है, इसलिए इन दोनों के भेद को जानने के लिए अरस्तू के कारणता सिद्धान्त को जानना आवश्यक हो जाता है।

अरस्तू ने अपने कारणता सिद्धान्त में कारण (Cause) और प्रयोजन (Reason) के अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। किसी घटना या वस्तु का कारण हमें उसके विषय में 'कैसे' या 'किस प्रकार' का ज्ञान प्रदान करता है। इसके विपरीत प्रयोजन को जान लेने पर हम घटना के विषय में 'क्यों' को जान लेते हैं। प्रयोजन में कारण का अन्तर्भाव हो जाता है पर कारण में प्रयोजन का समावेश नहीं होता। Aristotal के अनुसार कारण वह उपकरण है जिसके माध्यम से प्रयोजन जगत् के व्यापार को प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ दुर्घटना या रोग किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण तो हो सकता है उसका प्रयोजन नहीं। इसी तरह 'क्यों' का उत्तर प्रयोजन से प्राप्त होता है- और 'कैसे' का उत्तर कारण से मिलता है। कारण की व्याख्या करने से तो किसी घटना की समग्र व्याख्या नहीं हो जाती, जबतक कि उसके प्रयोजन की व्याख्या न हो जाये।

अतः अरस्तू ने कारण और प्रयोजन में एक महत्वपूर्ण भेद किया है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। अब अरस्तू किसी नवीन घटना के लिए चार कारण की कल्पना करता है और कहता है कि ये चारो कारण किसी भी वस्तु के निर्माण के लिए आवश्यक है। अतः वस्तु के निर्माण हेतु इन चारो कारणों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner

① Material cause, ② efficient cause, ③ formal cause, ④ final cause.

अरस्तू का कहना है कि ये चारों कारण मिलकर किसी घटना या वस्तु का निर्माण करते हैं। परन्तु अरस्तू इन चारो कारणों को बाद में चलकर दो ही रूप दिया है Matter और Form. अरस्तू निमित कारण (Efficient cause, स्वरूप कारण और लक्ष्य कारण Formal cause and final cause) को एक कारण के रूप में मान लिया जिसे उन्होंने स्वरूप कारण कहा। उन्होंने कहा कि ये तीनों अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही का रूपान्तर मात्र ही है। अरस्तू की यह धारणा थी कि स्वरूप कारण किसी वस्तु का 'सार' (Essence) या विज्ञान (Idea) है और लक्ष्य उस Essence यानि स्वरूप का साकार रूप है। अतः ये दोनों एक है इसी तरह लक्ष्य जो परिणाम स्वरूप है निमित्त कारण के द्वारा ही बना है अर्थात् निमित्त कारण के द्वारा ही स्वरूप वस्तु से लक्ष्य में परिवर्तित होता है। इसलिए अरस्तू का विचार है कि इन तीनों में आपस में समन्वय है, विभेद नहीं।

ऊपर की व्याख्या से यह पता चलता है कि अरस्तू के अनुसार प्रत्येक वस्तु के दो पक्ष हैं ① द्रव्य और ② स्वरूप।

अब अरस्तू के अनुसार द्रव्य और स्वरूप की व्याख्या इस प्रकार की गई है।

अरस्तू का कहना है कि साधारण ढंग से देखने पर द्रव्य और स्वरूप में अन्तर दीख पड़ता है परन्तु वास्तविक रूप में इन दोनों में कोई अन्तर नहीं। अरस्तू का कहना है कि अन्तर है भी तो विचार के क्षेत्र में व्यवहार में इन दोनों में कोई अन्तर करना कठिन ही नहीं असम्भव है। अर्थात् हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि द्रव्य और स्वरूप का अन्तर सैद्धांतिक है व्यवहार में ये एक-दूसरे के विपरीत नहीं है, अतः जगत् के प्रत्येक वस्तु, स्वरूप और द्रव्य का योग है। यहाँ पर लगता है कि अरस्तू का विचार Hegelian विचार से मिलता है। Hegal ने भी इसी तरह के Thesis, Antithesis और Synthesis की बात की थी और इसी से जगत् के विकास के क्रम के बारे में बताया था।

Scanned with CamScanner

अरस्तू के अनुसार जगत की वस्तुएँ स्वरूप और द्रव्य का मिश्रण है परन्तु अब प्रश्न उठ सकता है कि क्या अरस्तू का स्वरूप से मतलब आकार से था लेकिन अरस्तू आकार को स्वरूप नहीं माना है। स्वरूप और आकार में अन्तर है। आकार का अध्ययन हम रेखागणित में करते हैं जैसे त्रिभुज, चतुर्भुज आदि। लेकिन वास्तव में ऐसी आकृतियाँ नहीं है। यहाँ पर यह स्पष्ट है कि कोई वस्तु चतुर्भुजाकार या त्रिभुजाकार हो सकती है, परन्तु त्रिभुज या चतुर्भुज अपने आप में कोई अस्तित्व नहीं रखता।

वस्तुतः न तो 'द्रव्य' से Aristotle का तात्पर्य 'भौतिक द्रव्य' से है और न स्वरूप का 'आकार' से है। यद्यपि इन दो विचारों में पर्याप्त साम्य है पर इसका यह अर्थ नहीं कि ये दोनों एक हैं। जिस प्रकार आकार और स्वरूप में अन्तर है ठीक उसी तरह अरस्तू द्रव्य और भौतिक द्रव्य में अन्तर करता है। द्रव्य की हमारी साधारण कल्पना एक निरपेक्ष वस्तु से है जो सर्वथा द्रव्य ही बनी रहती है, जब तक कि उसमें परिवर्तन नहीं किया जाये। ऐसा नहीं कि वह एक ईंट से द्रव्य और दूसरी ईंट से कोई अन्य चीज लोहा, काँसा, सोना इत्यादि भौतिक वस्तुएँ सदा द्रव्य ही रहती है, पर अरस्तू का द्रव्य इसके विपरीत है। उनका द्रव्य सापेक्ष प्रत्यय और स्वरूप परस्पर सापेक्ष विचार है और इसलिए वह तरल प्रत्यय है। अरस्तू का द्रव्य सदैव स्वरूप से मिश्रित रहता है और द्रव्य का अस्तित्व एवं गुण का परिवर्तन उसमें मिलते हुए स्वरूप के द्वारा होता है इसलिए एक ही वस्तु कभी द्रव्य और कभी स्वरूप होता रहता है। उदाहरणार्थ – लकड़ी की बनी चीजों के सम्बन्ध से वह (लकड़ी) जड़ है, किन्तु लकड़ी स्वयं वृक्ष के सम्बन्ध से आकार है। अर्थात् एक ही वस्तु एक के सम्बन्ध से जड़ है और दूसरे के सम्बन्ध से आकार है, अर्थात् दोनों चीज एक साथ चलती है। जड़ में परिवर्तन की क्षमता होती है और जो चीज परिवर्तित होकर हमारे सामने आ जाती है, वह आकार होती है।

Scanned with CamScanner

"Matter is that which becomes and what it becomes is form"

इस प्रकार द्रव्य और स्वरूप स्थिरत्न होकर गत्यात्मक प्रत्यय है। यही निष्कर्ष यहाँ आकार के लिए भी लागू होता है। आकार एक स्थिर कल्पना है जो नहीं बदलती है। यदि किसी वस्तु का आकार गोल है तो वह सदा गोल ही रहेगा यदि वह चकोर है तो सदा चकोर ही रहेगा, पर स्वरूप एक तरल प्रत्यय है जो प्रभावित होता रहता है। इसलिए यह एक सापेक्षिक कल्पना है। आकार एक निरपेक्ष प्रत्यय है। आकार स्वरूप का ही एक अंग के रूप में हो सकता है।

स्वरूप में क्रिया निहित रहती है पर आकार में क्रिया नहीं रहती है। एक मनुष्य के हाथ की भिन्न-भिन्न क्रियाएँ होती हैं। ये क्रियाएँ उसके स्वरूप के कारण है। इस तरह स्वरूप में क्रिया का होना आवश्यक है, परन्तु आकार के लिए नहीं। जैसे मनुष्य के कटे हुए हाथ में आकार होता है पर उसमें क्रिया नहीं होती। अतः उसमें स्वरूप की निश्चित रूप से कमी मानी जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वरूप केवल आकार ही नहीं उससे और कहीं अधिक है।

अरस्तू का द्रव्य Particular है और स्वरूप Universal है। स्वरूप एक प्रत्यय है और प्रत्यय Universal है इसलिए स्वरूप भी Universal है। जिस प्रकार स्वरूप और द्रव्य एक दूसरे से पृथक नहीं किये जा सकते उसी तरह सामान्य और विशेष को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। अरस्तू का सामान्य और विशेष एक-दूसरे पर आश्रित है जो Plato के 'सामान्य' सम्बन्धी विचार से भिन्न है। परन्तु अरस्तू का विशेष से मतलब Individual से नहीं है।

इस तरह सामान्य और विशेष अलग-अलग नहीं रह सकते। एक की उपस्थिति के लिए दूसरे की भी उपस्थिति का होना जरूरी है।

अरस्तू के अनुसार शुद्ध द्रव्य जो सभी वस्तुओं में निहित रहता है वह निरपेक्ष रूप से गुणरहित रहता है एवं अनिश्चित होता है। वस्तु के गुण के अन्तर

का कारण द्रव्य नहीं बल्कि स्वरूप ही है गुण की भी परिवर्तन स्वरूप के कारण ही होता है, जिस द्रव्य पर जैसा स्वरूप आरोपित किया जाता है, वह उसी गुण का हो जाता है आधुनिक भौतिकशास्त्र के अनुसार विभिन्न भौतिक पदार्थों में अन्तर माना जाता है, जैसे- सोना-चाँदी आदि, परन्तु अरस्तू को यह मान्य नहीं है। उसके अनुसार द्रव्य अपने आप में कोई गुण नहीं रखता, उससे सब कुछ बनाया जा सकता है।

साधारणतः Potentiality द्रव्य में होता है और Actuality form में। Potentiality द्रव्य की वह शक्ति है जिससे किसी वस्तु का होना होता है द्रव्य में Potentiality जब दूसरे रूप में आ जाता है तब वह Actuality कहलाता है अतः उसी तरह अरस्तू Potentiality और Actuality में भेद करता है। अतः प्रत्येक परवर्ती इकाई, पूर्ववर्ती इकाई के लिए स्वरूप है और प्रत्येक पूर्ववर्ती इकाई परवर्ती इकाई के लिए द्रव्य है। विकास के क्रम में हम जितना ही आगे बढ़ते जाते हैं स्वरूप की मात्रा बढ़ती जाती है और जितना ही पीछे की ओर अग्रसर होते हैं स्वरूप की मात्रा घटती जाती है। इसी तरह विकास की अन्तिम अवस्था में स्वरूप का चरम उत्कर्ष होता है और द्रव्य का अपकर्ष पाया जाता है और यही Aristotle का ईश्वर है। विकास के आरम्भिक काल में जो इकाई आयेगी उसमें स्वरूप का अभाव रहेगा वह केवल शुद्ध द्रव्य ही होगा। यह बिल्कुल निरपेक्ष, निराकार, निर्गुण होगा और सभी का आधार होगा भी होगा। अब प्रश्न यहाँ आता है कि यदि जगत् के अधिष्ठान तत्व द्रव्य में रूप और गुण नहीं है तो जगत् की सृष्टि कैसे होगी। परन्तु अरस्तू का कहना है कि कार्य किसी न किसी रूप में अपने कारण में निहित रहता है इसी प्रकार वह सत्कार्यवादी भी है अतः प्रारम्भिक द्रव्य बिल्कुल निर्गुण, निराकार और निरपेक्ष नहीं हो सकता और

ने अन्तिम द्रव्य ही पदार्थहीन होगा। अरस्तू के अनुसार द्रव्य और स्वरूप में जो पृथकता स्वीकार की गई है वह निरर्थक है। संसार की प्रत्येक वस्तु निम्नतर से उच्चतर तक में द्रव्य और स्वरूप का समावेश पाया जाता है। अतः द्रव्य में किसी भी तरह के परिवर्तन होने की क्षमता पायी जाती है। अतः दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि द्रव्य प्रत्येक वस्तु की सम्भावना है परन्तु द्रव्य के अतिरिक्त एक अन्य वस्तु भी है जो उसके स्वभाव को निर्धारित करती है और वह उसका स्वरूप है जो साध्य रूप में उसके भीतर निहित रहता है अरस्तू का कहना है कि संसार में जितने गति परिवर्तन और परिणाम हैं वे सभी सम्भावना से सिद्धता अथवा द्रव्य से स्वरूप की ओर संक्रमण के उदाहरण हैं।

अतः अरस्तू प्राचीन काल के परिणामवाद की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है, असत् केवल असत् को ही उत्पन्न कर सकता है। और सत् केवल सत् को ही जन्म दे सकता है। इसी तरह काल की दृष्टि से द्रव्य स्वरूप से पहले आता है पर विचार की दृष्टि से स्वरूप द्रव्य से पहले आता है। इस प्रकार "अन्त" 'आदि' में निहित है 'लक्ष्य' उपादान में ही विद्यमान है। सम्पूर्ण परिणाम का रहस्य लक्ष्य या उद्देश्य की प्राप्ति है और उसी से प्रेरित होती है इससे यह भी स्पष्ट होता है कि 'लक्ष्य' ही वास्तव में परिणाम का प्रवर्तक कारण है। लक्ष्य सम्पूर्ण सृष्टि प्रक्रिया में व्याप्त रहता है।

लेकिन Mill और न्याय, वैशेषिक दार्शनिक के अनुसार कारण कार्य से पहले आता है परन्तु अरस्तू का कहना है कि यह पूर्ण सत्य नहीं है, क्योंकि लक्ष्य ही वास्तविक कारण है और लक्ष्य यदि आदि में उपस्थित नहीं होता है तो क्रिया का प्रारम्भ कैसे होगी? "अतः क्रिया की उत्पत्ति के लिए कारण को आदि, मध्य एवं अन्त तीनों अवस्था

Scanned with CamScanner

में रहना चाहिए। इन सारी बातों को देखने से पता चलता है कि इनमें आपस में विरोध है, पर तात्विक दृष्टि से देखने पर इसमें कोई विरोधाभास नहीं दिखलायी पड़ता। अतः सम्पूर्ण विश्व द्रव्य और स्वरूप का ही रूप है, इसी से सृष्टि की रचना होती है।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि अरस्तू के अनुसार द्रव्य और स्वरूप दो ऐसे पदार्थ हैं जो स्वभाव से भिन्न होते हुए भी ये दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते हैं। Plato ने भी दो सत्ता की बात की थी पर वह दोनों को एक-दूसरे से भिन्न माना था यानि व्यवहारिक और पारमार्थिक सत्ता में अन्तर किया था। उसके अनुसार विद्वान से विरोध अलग है परन्तु अरस्तू का विचार Plato के विचार से भिन्न था। उनका कहना था कि स्वरूप और द्रव्य कभी भी पृथक-पृथक नहीं रह सकता।

Scanned with CamScanner